Bihar Board Class 7 Social Science History Solutions Chapter 5 शक्ति के प्रतीक के रूप में वास्तुकला, किले एवं धर्मिक स्थल

पाठगत प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.
लिंगराज और. महाबोधि मंदिर की संरचना में क्या. अंतर दिखता है ?
उत्तर-
लिंगराज मंदिर का ऊपरी भाग जहाँ कम पतला है वहीं महाबोधि मंदिर का ऊपरी भाग नुकीला होता गया है । लिंगराज मंदिर के पास छोटे मंदिरों का एक समूह दिखाई देता है वहीं महाबोधि मंदिर में मात्र दो ही छोटे मंदिर दिख पाते हैं।

प्रश्न 2.
कोणार्क का सूर्य मंदिर तथा मीनाक्षी मंदिर के ऊपरी भागों में क्या
अंतर है?
उत्तर-
कोणार्क का सूर्य मंदिर का शिखर मीनाक्षी मंदिर की अपेक्षा छोटा है। कोणार्क मंदिर का शिखर त्रिकोणकार है जबकि मीनाक्षी मंदिर का शिखर चौकोर है और ऊपर धनुषाकर होता गया है।

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

आओ याद करें :

प्रश्न 1.
मध्यकाल में मंदिर निर्माण की कितनी शैलियाँ मौजूद थीं ?
(क) चार
(ख) पाँच
(ग) तीन
(घ) दो
उत्तर-
(ग) तीन

प्रश्न 2.
बिहार में नागर शैली में बने मंदिरों का सबसे अच्छा उदाहरण । कौन-सा है?
(क) महाबोधि मंदिर
(ख) देव का सूर्य मंदिर
(ग) पटना का महावीर मंदिर

https://www.evidyarthi.in/

(घ) गया का विष्णु मंदिर
उत्तर-
(क) महाबोधि मंदिर

प्रश्न 3.
मुसलमानों द्वारा बिहार में बनाई गई सबसे महत्त्वपूर्ण इमारत कौन है ?
(क) मलिकबया का मकबरा
(ख) बेगु हजाम की मस्जिद
(ग) तेलहाड़ा की मस्जिद
(घ) मनेर की दरगाह ।
उत्तर-
(घ) मनेर की दरगाह ।

प्रश्न 4.
मुगलकालीन स्थापत्य कला अपने चरम पर कब पहुँचा?
(क) अकबर के काल में
(ख) जहाँगीर के काल में
(ग) शाहजहाँ के काल में
(घ) औरंगजेब के काल में
उत्तर-
(ग) शाहजहाँ के काल में

प्रश्न 5.
शाहजहाँ ने लाल किला का निर्माण दिल्ली में किस वर्ष करवाया ?
(क) 1638
(ख) 1648
(ग) 1636
(घ) 1650
उत्तर-
(क) 1638

आओ याद करें

प्रश्न 1.
सही और गलत की पहचान करें :

1. उत्तर भारत में मंदिर निर्माण की द्राविड़ शैली प्रचलित थी ।
2. कोणार्क का सूर्य मंदिर बंगाल में स्थित है।
3. मुगलकालीन वास्तुकला अकबर के शासन काल में अपने चरम । विकास पर पहुँचा ।।
4. शेरशाह का मकबरा सल्तनत काल और मुगल काल की वास्तुकला के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाता है ।
5. बिहार में मुस्लिम उपासना स्थल निर्माण का प्रथम उदाहरण बेगुहजाम मस्जिद है ।

https://www.evidyarthi.in/

उत्तर-

1. गलत है। सही है कि 'नागर शैली' प्रचलित थी।
2. गलत है । सही है कि 'उड़ीसा' में है ।
3. गलत है । सही है कि 'शाहजहाँ' के शासन काल में।
4. सही है।
5. गलत है । सही है कि मनेर का दरगाह प्रथम उदाहरण है ।

आइए विचार करें

प्रश्न 1.
मंदिरों के निर्माण से राजा की महत्ता का ज्ञान कैसे होता है ?
उतर-
मध्यकालीन शासकों ने जितने मंदिर बनवाये, यह उनकी आस्था का प्रतीक तो था ही, यह भी सम्भव है कि वे राजा प्रजा को यह दिखाना चाहते हों कि वे उनकी आस्था को भी आदर देना चाहते हैं । वे प्रजा से अपने आदर के भी आकांक्षी थे। वे यह भी दिखाना चाहते थे कि वे न सिर्फ सैनिक शक्ति में, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी मजबूत हैं । वे वास्तकारों को रोजगार भी महया कराना चाहते थे । इस प्रकार हम देखते हैं कि मंदिरों के निर्माण से राजा की महत्ता का ज्ञान निश्चित ही प्राप्त होता है ।

प्रश्न 2.
वर्तमान इमारत और मध्यकालीन इमारतों में उपयोग की जाने वाली सामग्री के स्तर पर आप क्या अन्तर देखते हैं ?
उत्तर-
वर्तमान इमारत और मध्यकालीन इमारतों में उपयोग की जाने वाली सामग्री के स्तर पर हम यह अंतर पाते हैं कि वर्तमान में ईंट, बालू, सीमेंट, छड़ की प्रधानता रहती है । कुछ धनी-मानी लोग फर्श बनाने में, संगमरमर का उपयोग भी करते हैं । इसके पूर्व अंग्रेजी काल में ईंट, चूना-सूर्जी का गारा, लकड़ी और छड़ आदि का उपयोग होता था । 1950 के पहले के बने इमारतों में ये ही सामग्रियाँ व्यवहार की जाती थीं । मध्यकालीन इमारतों में मुख्य सामग्री पत्थर थे । पत्थरों को तराशा जाता था । मन्दिरों की बाहरी और भीतरी दीवारों को विभिन्न प्रकार की मूर्तियों से अलंकृत किया जाता था ।

प्रश्न 3.
मंदिर निर्माण की नागर और द्रविड़ शैलियों में अंतर बताएँ।
उत्तर-
मंदिर निर्माण की नागर और द्राविड़ शैलियों का उपयोग साथ-साथ ही हुआ । नागर शैली जहाँ उत्तर भारत में प्रचलित थी वहीं द्राविड़ शैली दक्षिण भारत में प्रचलित थी । नागर शैली के मंदिर आधार से शीर्ष तक आयताकार एवं शंक्वाकार संरचना से बने होते थे । शीर्ष क्रमशः नीचे से ऊपर पतला होता जाता है, जिसे शिखर कहा जाता था । प्रधान देवता की मूर्ति जहाँ स्थापित होती थी, उसे गर्भ गृह कहते थे । मंदिर अलंकृत स्तंभों पर टिका होता था। चारों ओर प्रदक्षिणा पथ भी होता था ।

द्राविड़ शैली की विशेषता थी कि गर्भ गृह के ऊपर कई मंजिलों का निर्माण होता था जो न्यूनतम 5 और अधिकतम 7 मंजिल तक होते थे । स्तंभों पर टिका एक बड़ा कमरा होता था, जिसे मंडपम कहा जाता था । गर्भ गृह के सामने अलंकृत स्तंभों पर टिका एक बडा कक्ष होता था, जिसमें धार्मिक अनुष्ठान किये जाते थे । प्रवेश द्वार भव्य और अलंकृत होता था । इसे गोपुरम कहा जाता था ।

https://www.evidyarthi.in/